बच्चों पर आधारित टेलीविज़न धारावाहिकों का अंतर-वस्तु विश्लेष्णात्मक अधयन्न

दीपक

शोधार्थी
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
चौधरी देवी लाल विश्वविधालय, सिरसा

सारांश -: टेलीविजन जनसंचार का माध्यम है और लगभग 63 वर्षों से भारत में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारत मे सबसे पहले कम लागत मे टेलीविज़न ट्रांसमीटर लगाने का प्रस्ताव 1959 मे फिलिप्स इंडिया ने रखा, जिसके बाद टेलीविज़न ने भारत मे संचार का रूप ही बदल कर रख दिया और भारत मे 1959 मे दूरदर्शन चैनल की शुरुवात हुई और लगभग दो साल बाद ही 1961 मे टेलीविज़न पर माध्यमिक विद्यालय टेलीविजन परियोजना (1961) के अंतर्गत स्कूल मे बच्चो के कुछ विषय से सम्बन्धित कक्षाएं टेलीविज़न के माध्यम से शुरू की गई जिससे शिक्षा का एक नया रूप देखने को मिला, इससे हम बच्चों के लिए शुरू हुई डिजिटल शिक्षा की शुरवात के रूप मे भी देख सकते है जिसमे बच्चे अपने घर पर रहकर ही शिक्षा प्राप्त कर सकते थे लगभग दो दशक के बाद 1982 के एशियाई खेलों के दौरान टीवी पर रंगीन प्रसारण किया गया जिससे टेलीविजन धारावाहिक को अस्सी के दशक में आवश्यक बढ़ावा मिला जिसके बाद दूरदर्शन पर अलग अलग तरह के टेलीविज़न धारावाहिक प्रसारित होने लगे | यह शोध पत्र टेलीविज़न पर प्रसारित हुए बच्चों पर आधारित धारावहिकों का अधयन्न बताता है अंतर-वस्तु विश्लेष्णात्मक शोध पद्धति के द्वारा इस शोध पत्र मे बच्चों से सम्बन्धित टेलीविज़न धारावहिकों पर चर्चा की गई है

बीजक शब्द: टेलीविज़न, बच्चों के धारावाहिक, दूरदर्शन, माध्यमिक विद्यालय, रंगीन प्रसारण

परिचय :

आधुनिक समय मे तकनीकी दौर ने आज जीवन को इतना सरल बना दिया है कि शिक्षा से लेकर मनोरंजन तक सब मोबाइल पर सिमट कर रह गया है जहाँ प्राचीन समय मे शिक्षा गुरुकुल मे रहकर प्राप्त की जाती थी और मनोरंजन के लिए खेल खेले जाते थे या परम्परागत लोक माध्यम जैसे कठपुतली, तमाशा, रासलीला, नाटक, लोकगीत आदि जैसे माध्यमो का मनोरंजन के लिए प्रयोग किया जाता था वही आज अख़बार से शुरू हुए इन्टरनेट रूपी विकास ने सब बदल कर रख दिया है आज शिक्षा हो या मनोरंजन घर पर बैठे-बैठे हमे मिल रहा है अगर हम भारत मे टेलीविज़न पर प्रसारित होने वाले बच्चों के धारावाहिक की बात करे तो यह बच्चों का मनोरंजन करने के लिए बनाए गए थे टेलीविज़न धारावाहिक एक ऐसा नाटकों का रूपान्तरण था जिसे कई एपिसोड मे बाटा गया था जो दैनिक और साप्ताहिक टेलीविज़न पर प्रसारित किए जाते थे धारावाहिकों को अंग्रेजी भाषा मे शॉप ओपेरा कहा जाता है समय के साथ जैसे - जैसे नए टेलीविज़न चैनल अस्तित्व मे आने लगे वैसे कई तरह के नए धारावाहिक शुरू होने लगे भारत मे रंगीन टेलीविज़न के आने के बाद टेलीविज़न को एक नया रूप मिल गया जिसके बाद विभिन तरह के कार्यक्रम देखने वाले लोगों के लिए टेलीविज़न पर विभिन तरह के धारावाहिक प्रसारित होने लगे अगर हम बच्चों से सम्बन्धित टेलीविज़न धारावाहिक की बात करे तो यह भारत मे रंगीन टेलीविज़न के आगमन के बाद शुरू हुए

भारत में टेलीविजन की शुरुआत -:

भारत मे टेलीविज़न की यात्रा लगभग 63 वर्ष पूर्व शुरू हुई थी जिसमे समय के साथ कई बदलाव आते गए सबसे पहले भारत मे कम लागत मे टेलीविज़न ट्रांसमीटर लगाने का प्रस्ताव 1959 मे फिलिप्स इंडिया ने सरकार के समक्ष रखा और इससे पहले फिलिप्स ने नई दिल्ली मे टेलीविजन के प्रयोग का प्रदर्शन भी किया था और सरकार इस प्रस्ताव पर आसानी से मान गई इसका मकसद प्रयोगात्मक रूप मे कर्मचारी परिक्षण, सामुदायिक विकास व उपचारिक शिक्षा मे मदद से था यूनेस्को ने टीवी सेट के लिए भारत को बीस हजार डॉलर का अनुदान दिया अमेरिका ने कुछ उपकरण भारत को दिए जिसके बाद टेलीविजन ने 15 सितंबर, 1959 को भारत के राष्ट्रीय टेलीविजन नेटवर्क के रूप में कार्य करना आरंभ किया । टेलीविज़न पर पहला प्रसारण नई दिल्ली में शुरू हुआ था। फिर टेलीविज़न पर सप्ताह मे दो दिन पर 20 मिनट की अवधि के लिए कार्यक्रम प्रसारित होने लगे कई वर्षों तक प्रसारण

ब्लैक एंड व्हाइट ट्रांसमिशन मे मुख्य रूप से होता था। बच्चों के लिए 1961 मे टेलीविज़न पर माध्यमिक विद्यालय टेलीविजन परियोजना (1961) के अंतर्गत स्कूल मे बच्चो के कुछ विषय से सम्बन्धित कार्यक्रम टेलीविज़न के माध्यम से कक्षाएं के रूप मे प्रसारित किए गए यह कार्यक्रम दिल्ली के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिए तैयार किए गए थे । दिल्ली में प्रयोगशालाओं, स्थान, उपकरणों की कमी और योग्य शिक्षकों की कमी के कारण शिक्षण के स्तर में सुधार के लिए अक्टूबर 1961 में भौतिकी, रसायन विज्ञान, अंग्रेजी और हिंदी के शिक्षण के लिए यह टेलीविज़न कक्षाएं माध्यमिक विद्यालय टेलीविजन परियोजना के अंतर्गत शुरू हुई।

1961 मे यूनेस्को ने एक सर्वे करवाया जिसके मुताबित कार्यक्रम ने कुछ प्रभाव लोगों पर डाला 1965 मे सुचना और मनोरजन सम्बन्धित कार्यक्रम प्रस्तुत होने लगे, इसरो और नासा के द्वारा 1975 मे साईट प्रोजेक्ट (सेटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविज़न एक्सपेरिमेंट) लौंच किया गया जिसने टीवी की दिशा बदल दी उसके बाद यूनेस्को के खेडा प्रोजेक्ट ने भी टेलीविज़न के सफर मे अहम भूमिका निभाई टेलीविजन को अस्सी के दशक में आवश्यक बढ़ावा मिला जब दूरदर्शन ने 1982 के एशियाई खेलों के दौरान रंगीन प्रसारण पेश किया।

नब्बे के दशक की शुरुआत में विकास का अगला चरण आया टी.वी. पर जब सीएनएन, स्टार टीवी जैसे विदेशी चैनलों और ज़ी टीवी और सन टीवी जैसे घरेलू चैनलों ने उपग्रह संकेतों का प्रसारण शुरू किया। इससे परिदृश्य बदल गया और लोगों को क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कई तरह के कार्यक्रम देखने का अवसर प्राप्त हुआ ।

भारत में दूरदर्शन पर हम लोग के नाम से टीवी के रंगीन प्रसारण के बाद पहला सोप ओपेरा प्रसारित किया गया था। भारत में पहला बच्चों का सोप ओपेरा विक्रम बेताल था, जिसका दूरदर्शन पर प्रसारण 1985 में हुआ था।

उद्देश्य:

- भारत मे टेलीविज़न के विकास की यात्रा का अध्ययन
- भारत मे टेलीविज़न पर बच्चों के लिए प्रसारित धारावाहिकों का अध्ययन

शोध पद्धति :

इस शोध कार्य के लिए अंतर-वस्तु विश्लेष्णात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है जिसके अंतर्गत टेलीविज़न पर बच्चों से सम्बन्धित प्रसारित होने वाले व प्रसारित किए जाने वाले धारावाहिकों की विषय वस्तु का अध्ययन किया गया है क्युकि यह एक लघु शोध कार्य है इसलिए विश्लेष्णात्मक अध्ययन को अधिक विस्तृत स्वरूप प्रदान नही किया गया है

भारतीय टेलीविज़न पर प्रसारित बच्चों पर केन्द्रित धारावाहिकों पर अधयन्न :

टेलीविज़न पर प्रसारित होने वाले धारावाहिक श्रृंखला के रूप मे प्रसारित किये जाते है जिसकी पहले पटकथा लिखी जाती है जिसके अनुरूप धारावाहिकों को तैयार किया जाता है टेलीविज़न पर धारावाहिक सीरिज मे भी प्रसारित किये जाते है जिसमे पात्र भी बदल जाते है टेलीविज़न पर प्रसारित होने वाले धारावाहिक की श्रृंखला को सिमित या लघु श्रृंखला भी कहा जाता है भारतीय टेलीविज़न पर कई तरह की बच्चों पर केन्द्रित शो प्रसारित होते रहे है जो मनोरंजन और शिक्षा की दृष्टि से बच्चों पर प्रभाव डालते है आईए अब चर्चा करते टेलीविज़न पर प्रसारित होने वाले बच्चों से सम्बन्धित मुख्य धारावाहिकों की जो इस प्रकार है

तक 1990 से 1980 के काल कर्म मे प्रसारित धारावाहिक

विक्रम और बेताल -:

विक्रम और बेताल एक भारतीय पौराणिक टेलीविजन श्रृंखला है जो 1985 में डीडी नेशनल पर प्रसारित हुई और यह श्रृंखला बच्चों को इतनी बेहतर लगी की इसका दुबारा से 1988 में प्रसारण किया गया। इस श्रृंखला में भारतीय पौराणिक कथाओं की कहानियां थीं। कहानियों को अनूठे ढंग से दिखाने के कारण ये कार्यक्रम बच्चों मे काफी परचलित था इसकी अवधारणा बैताल पचीसी पर आधारित थी, जिसे विक्रम-बेताल के नाम से भी जाना जाता है यह शो 1985 से 1986 तक रविवार को भारतीय मानक समयानुसार शाम 4:30 बजे प्रसारित हुआ करता था।

इन्द्रधनुष-:

यह धारावाहिक 1989 मे डीडी नेशनल चैनल पर प्रसारित किया गया था यह भारतीय बच्चों की टेलीविजन श्रृंखला थी , इन्द्रधनुष धारावाहिक एक विज्ञान कथा और कल्पना का मिश्रण है। जिससे बेहद खुबसूरत तरीके से आनंद महेंद्र ने निर्देशन किया था। इसमें करण जौहर, उर्मिला मातोंडकर, विशाल सिंह, आशुतोष गोवारिकर और अक्षय आनंद जैसे कई युवा कलाकार भी थे

1990 से 2000 तक काल कर्म मे प्रसारित धारावाहिक

पोटली बाबा की-:

1991 मे दूरदर्शन पर एक कठपुतली टेलीविजन श्रृंखला का प्रसारण किया गया है जिसका नाम था पोटली बाबा की । यह श्रृंखला दूरदर्शन पर बच्चों के लिये प्रसारित की गई इसमें विभिन्न परियों की कहानियों को दिखाया गया था और इसका उपयोग बच्चों को अच्छे नैतिक संदेश देने के लिए किया गया इसमें शीर्षक गीत "आया रे बाबा" विनोद सहगल द्वारा गाया गया था और यह गीत हिंदुस्तान के महान कवि गुलजार द्वारा रचित था, जो शो के सह-निर्माता, निर्देशक और लेखक भी थे श्रृंखला के दो भाग हैं: "अली बाबा और चालीस चोर" (दस एपिसोड) और "अलादीन एंड द मैजिक लैंप" (दस एपिसोड) ,उस 'पोटली' में विभिन्न कहानियाँ होती थी जिससे घुंगर गांव में रहने वाले पुराने कथाकार जिन्हें लोग बाबा के नाम से जानते हैं वो सुनते हैं ये बहुत सीकहानियों और दंतकथाओं को इकट्ठा करते हैं, जिन्हें उनकी मां ने चट्टानों के नीचे छिपा दिया है। बाबा की ख़ासियत यह है कि वह दिन-ब-दिन जवान होते जा रहे हैं और एक बार उन्हें सारी कहानियाँ मिल जाएँगी तो वे एक बच्चे बन जाएँगे ।

जंगल बुक -:

दा जंगल बुक मूल रूप से रुडयार्ड किपलिंग की सबसे लोकप्रिय बच्चों की कहानियों में से एक का जापानी एनीमेशन रूपांतरण है इससे 1993 मे हिंदी भाषा मे डब कर दूरदर्शन पर प्रसारित किया गया था यह बच्चों का बेहद लोक प्रिय शो था इस धारावाहिक का साउंड ट्रैक “जंगल जंगल बात चली है” करोड़ों लोग इस गाने को जानते है इस धारावाहिक की कहानी मोगली नाम के बच्चे के इर्द गिर्द घुमती है जिससे जंगल मे भेडियों के समूह द्वारा पाला गया है यह दूरदर्शन के प्रशिद्ध धारावाहिक मे आता है 2020 मे कोविड के समय फिर से प्रसारित किया गया था

शक्तिमान -:

1997 में दूरदर्शन पर एक धारावाहिक शुरू हुआ जिसका नाम था शक्तिमान. भारत में शक्तिमान धारावाहिक के आगमन से भारत को पहला सुपरहीरो मिल गया । बच्चों के लिए सुपरहीरो कार्यक्रमों की शुरवात जापानियों द्वारा शुरू की गई थी और उन्होंने एस्ट्रो बॉय के साथ इसकी शुरवात 1963 में नए साल के दिन की थी इसकी लोकप्रियता कुछ ही समय में आसमान छू गई, जिससे बच्चों के टेलीविजन सुपरहीरो कार्यक्रम एक वैश्विक घटना बन गए और उनकी लोकप्रियता मे हर दिन इजाफा होने लगा और भारतीय टेलीविजन पर अमेरिकी सुपरहीरो कार्यक्रम प्रसारित किये जाने लगे आखिरकार 13 सितंबर, 1997 को शक्तिमान के साथ भारत को भारत का पहला सुपर हीरो शो मिल गया ।

शक्तिमान सांस्कृतिक धारावाहिक के रूप में सामाजिक-ऐतिहासिक संदर्भ पर यह लोगों को जाग्रत करने का कार्य भी करता था, यह इसके रूपांकनों के व्यापक विश्लेषण के माध्यम से कहा जा सकता है, शक्तिमान एक भारतीय हिंदी भाषा का सुपर हीरो है जिससे डीडी नेशनल पर 13 सितंबर 1997 से 27 मार्च 2005 तक प्रसारित किया गया और शक्तिमान ने अपने 450 एपिसोड पूरे किए।

इस धारावाहिक को मुकेश खन्ना द्वारा निर्मित किया गया इसमें उन्होंने आज की आवाज अखबार के फोटोग्राफर शक्तिमान और उनके बदले अहंकार "पंडित गंगाधर विद्याधर मायाधर ओंकारनाथ शास्त्री" की भूमिका निभाई। शक्तिमान को एक ऐसे इंसान के रूप में चित्रित किया गया था जिसने ध्यान और प्रकृति के पांच तत्वों: अंतरिक्ष, पृथ्वी, वायु, अग्नि और जल के माध्यम से अलौकिक शक्तियां प्राप्त की हैं। इसमें किटू गिडवानी ने गीता विश्वास की भूमिका निभाई, जो एक रिपोर्टर है जो शक्तिमान से प्यार करती है। सुरेंद्र पाल ने इसमें तमराज किलविश की भूमिका निभाई। शो के बाद शक्तिमान: 2011 में एनिमेटेड सीरीज और 2013 में हमारा हीरो शक्तिमान नाम से एक टेलीविजन फिल्म को बच्चों के बीच लाया गया ।

शाका लाका बूम बूम-:

शाका लाका बूम बूम एक भारतीय धारावाहिक श्रृंखला है जिसे 15 अक्टूबर 2000 से डीडी नेशनल चैनल पर प्रसारित किया गया था। इसका प्रत्येक एपिसोड लगभग चौबीस मिनट का था। इस धारावाहिक का निर्देशन और लेखन विजय कृष्ण आचार्य द्वारा किया गया फिर 2001 में इससे स्टार प्लस पर शुरू किया गया था और इस श्रृंखला के 4 सीज़न प्रसारित किए गए जिसमें 491 एपिसोड थे। पहली श्रृंखला मुख्य चरित्र संजू के इर्द-गिर्द घूमती है, जिसे एक जादुई पेंसिल मिलती है, जिसमें वह जो कुछ भी चाहता है उसे हकीकत में लाने की क्षमता रखता है। दूसरा सीज़न शान के इर्द-गिर्द घूमता है जो एक एलियन है और इसके साथ ही इस सीज़न मे उसकी रहस्यमय पेंसिल के साथ रोमांचक अनुभव प्रस्तुत किया गया । तीसरे सीज़न में, संजू और शान जादू हाई नाम के एक जादू स्कूल में हैं और बहुत सारे रोमांचक कारनामों का अनुभव करते हैं। चौथे सीज़न में, संजू अपने परिवार की रक्षा करना चाहता है, और अपने परिवार की रक्षा के लिए वह वर्ष 2022 में जाता है। शाका लाका बूम बूम 90 के दशक के सर्वश्रेष्ठ जादुई और साहसिक शो में से एक है।

2000 से 2010 तक....

चाचा चौधरी-:

चाचा चौधरी एक भारतीय बच्चों की टेलीविजन श्रृंखला है जो कार्टूनिस्ट प्राण कुमार शर्मा द्वारा बनाई गई थी जो लोकप्रिय भारतीय हास्य पुस्तक चाचा चौधरी पर आधारित है भारतीय टेलीविजन के मशहूर अभिनेता रघुबीर यादव ने इस श्रृंखला मे चाचा चौधरी की भूमिका निभाई जिससे वो बच्चों मे मशहूर हो गए जिससे उन्हें सभी चाचा चौधरी कहकर बुलाने लगे इस प्रशिद्ध टी वी सीरीज को 2002 मे सहारा चैनल पर प्रस्तुत किया गया था

करिश्मा का करिश्मा -:

करिश्मा का करिश्मा एक साइंस फिक्शन धारावाहिक है जो 1980 के दशक की अमेरिकी टेलीविजन श्रृंखला स्मॉल वंडर का रीमेक है। इस धारावाहिक को 24 जनवरी 2003 को स्टार प्लस पर प्रसारित किया गया था। इस श्रृंखला का निर्माण सुनील दोशी ने किया था। शो का प्रसारण हर शुक्रवार शाम 7:30 बजे किया जाता था यह कहानी एक यथार्थवादी रोबोट के इर्द-गिर्द घूमती है जिसका नाम करिश्मा है और इसे एक वैज्ञानिक, विक्रम द्वारा डिजाइन किया गया था। विक्रम का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना था कि क्या करिश्मा रोबोट समय के साथ इंसानों जैसा बन जाएगा। जल्द ही विक्रम रोबोट करिश्मा को अपने घर लाता है और उसे अपनी पत्नी शीतल से परिचित करवाता है और जल्द ही वह रोबोट करिश्मा को अपनी बेटी के रूप में मान लेती है। श्रद्धा और परेश, जो विक्रम के पड़ोसी हैं, उनके जीवन में हस्तक्षेप करने की कोशिश करते हैं और यह पता लगाना की कोशिश करते है कि करिश्मा कौन है। एपिसोड्स में यह सिलसिला चलता रहता है जबकि करिश्मा हर बार अपने परिवार को पकड़े जाने से बचाती है। यह सर्वश्रेष्ठ फिक्शन श्रृंखलाओं में से एक है और यह बच्चों के बीच काफी प्रशिद्ध रही ।

ताकेशी केस्टल-:

यह एक जापानी गेम शो था। इस शो में कॉमेडी और एडवेंचर शामिल था। यह सिटकॉम 1986 और 1990 के बीच टेलीविजन पर आता था। पोगो टीवी चैनल पर हिंदी डबिंग के साथ एक छोटा संस्करण प्रसारित किया गया था जिसमे बहुत प्रसिद्ध कॉमेडियन, अभिनेता और नर्तक यानी जावेद जाफरी ने अपनी आवाज से चार चाँद लगा दिए थे इस पूरे शो में खिलाडियों को बड़ी संख्या में चुनौतियों का सामना करना पड़ता था। कुछ चुनौतियों में दीवार पर चढ़ना, पानी में गिरना, कीचड़ आदि शामिल हैं। यह शो 90′ के दौरान बहुत प्रसिद्ध था और उस दौरान बच्चों द्वारा काफी पसंद किया गया था। भारत में यह गेम शो 2005 में प्रसारित हुआ, जावेद के अलावा, इस शो को कथित तौर पर भारतीय कॉमेडियन राजू श्रीवास्तव, सुनील पाल, नवीन प्रभाकर और एहसान कुरैशी ने भी कम समय के लिए आवाज दी थी। अमेज़ॅन प्राइम वीडियो ने घोषणा की कि वह इस सीरिज को 2023 में 240 से अधिक बाजारों में इस शो को फिर से शुरू करेंगे।

अक्कड़ बक्कड़ बंबे बो -:

अक्कड़ बक्कड़ बंबे बो एक टेलीविजन श्रृंखला है जो मूल रूप से स्टार प्लस चैनल पर प्रसारित हुई थी और बाद में डिज़नी चैनल इंडिया पर सिंडिकेट की गई थी। कहानी एक सड़क किनारे विक्रेता के भूत वाले जीवन के इर्द-गिर्द घूमती है, जिसे स्वर्ग जाने के लिए एक निश्चित संख्या में अच्छे काम करने पड़ते हैं, और उसके अपमार्केट दोस्त जिन्हें वह बबुआ लॉग के रूप में संदर्भित करता है। बबुआ लॉग दुष्ट पौराणिक प्राणियों मे से है जिससे वह कठिन परिस्थितियों का सामना करता है जो अपनी दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों को करते हुए दुनिया पर कब्जा करना चाहते हैं। कार्यक्रम में देवेंद्र चौधरी नटवरलाल प्रसाद यादव के रूप में हैं।

छोटा भीम-:

छोटा भीम एक भारतीय एनिमेटेड कॉमेडी-एडवेंचर टेलीविजन श्रृंखला है, जो हैदराबाद में स्थित ग्रीन गोल्ड एनिमेशन द्वारा बनाई गई है। इसमें भीम को एक बहादुर, मजबूत और बुद्धिमान युवा के रूप मे दर्शाया गया है। वह अक्सर सभी की समस्याओं को हल करने का प्रबंधन करता है जो ढोलकपुर के शहरवासियों के लिए प्रिय है। इससे 2008 मे शुरू किया गया था

तारक मेहता का उल्टा चश्मा-:

यह भारत की टेलीविज़न सीरीज मे सबसे देर से आने वाला ब्लूमर है, जिसे 2008 में रिलीज़ किया गया था, लेकिन जब से यह छोटे पर्दे पर आया है, तब से कहीं भी पीछे नहीं हट रहा है। शो अभी भी लोगो के दिलो पर राज कर रहा है जेठालाल की समस्याओं और फायर ब्रिगेड तारक के मजाकिया और कभी-कभी भ्रमित समाधानों ने शो को इतना खुबसूरत बना दिया है कि यह धारावाहिक घर जैसा लगता है। गोकुलधाम समाज में हर तबके और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के पात्र हैं और हमें एकता का पाठ सिखाते है, जहां केवल शांति और सद्भाव हैं। पोपटलाल से लेकर चंपक चाचा तक शो मे बेहतरीन भूमिका निभा रहे है।

2010 से 2020 तक....

बाल वीर-:

बाल वीर एक भारतीय टेलीविजन श्रृंखला है। इसका प्रीमियर 8 अक्टूबर 2012 को सब टीवी पर हुआ और इसमें देव जोशी मुख्य भूमिका में हैं। यह ऑप्टिमिस्टिक्स एंटरटेनमेंट रोहित मल्होत्रा द्वारा निर्मित है। यह शो 1111 एपिसोड के साथ 4 नवंबर 2016

को ऑफ एयर हो गया। यह शो 2015 से सोनी सब की बहन चैनल, सोनी पाल पर प्रसारित किया जा रहा है। बालवीर रिटर्न्स, एक अगली कड़ी, देव जोशी अभिनीत, इस बार वंश सयानी के साथ, 10 सितंबर 2019 को शुरू हुआ और 2 अप्रैल 2021 को समाप्त हुआ। इसके दूसरे सीज़न का प्रीमियर 5 अप्रैल 2021 को हुआ और 30 जून 2021 को समाप्त हुआ।

मोटू पतलू -:

मोटू पतलू भारतीय एनिमेटेड सिटकॉम टेलीविजन श्रृंखला है। जिससे निकेलोडियन इंडिया के लिए नीरज विक्रम द्वारा लिखा गया है इसकी एक श्रृंखला का निर्माण कॉसमॉस-माया स्टूडियो द्वारा किया गया है। इसे क्लासिक कॉमिक स्ट्रिप से रूपांतरित किया गया है। इसका प्रीमियर 16 अक्टूबर 2012 को हुआ। यह दो दोस्तों, मोटू और पतलू पर केंद्रित है, जो फुरफुरी नगर नामक एक काल्पनिक शहर में रहते हैं, हालांकि बाद में श्रृंखला में वे एक अन्य काल्पनिक शहर में रहते हैं जिसे मॉडर्न सिटी के नाम से जाना जाता है। मोटू पतलू और उनके दोस्त यूरोप का दौरा कर रहे थे। लेकिन आजकल मोटू पतलू और उनके दोस्त भारतीय स्थानों का भ्रमण कर रहे हैं।यह भारत में सबसे लोकप्रिय बच्चों के शो में से एक है।

सूरज दा राइजिंग स्टार -:

यह एक भारतीय एनिमेटेड टेलीविजन श्रृंखला है जिससे द राइजिंग स्टार कोडनशा इंक, टीएमएस एंटरटेनमेंट और डीक्यू एंटरटेनमेंट द्वारा प्रस्तुत किया गया है यह जापानी एनिमेटेड सीरीज स्टार ऑफ द जायंट्स पर आधारित है और इसे कलर्स पर प्रसारित किया गया था। इस श्रृंखला का प्रीमियर 23 दिसंबर 2012 को हुआ था।

2021 से 2022 तक काल कर्म

पिछले 2 सालों में आजकल टेलीविजन की जगह वेब सीरीज देखने को मिल रही है। वेब सीरीज लगातार नई पीढ़ी मे अपना स्थान बना रही है। नेटफ्लिक्स, अमेज़ॅन प्राइम और हॉटस्टार की तरह, युट्यूब कुछ लोकप्रिय ऐप हैं जिनमें चाइल्ड रिलेटेड वेब सीरीज़ या फ़िल्में, टेलीविज़न सीरीज़ शामिल हैं। आजकल लोग विशेष रूप से नई पीढ़ी दैनिक टीवी धारावाहिकों और मेलोड्रामैटिक स्थितियों से पूरी तरह से ऊब चुके हैं। तो टेलीविजन श्रृंखला को तुरंत इंटरनेट वेब श्रृंखला बदला जा रहा है आधुनिकरण के कारण अब बच्चों को टेलीविज़न देखने की जरूरत नही पढती बल्कि आज के समय मे उनके मन पसिंदा कार्टून उनके मोबाइल पर ही उपलब्ध है ..

निष्कर्ष-:

टेलीविजन की 1959 से 2022 तक एक लंबी यात्रा है जिसमे बच्चों के लिए, सरकार ने 1961 में एक शैक्षिक कार्यक्रम का प्रसारण किया, और 1984 में टेलीविजन के नए रंगीन रूपान्तरण के बाद टेलीविजन पर प्रसारित पहले सोप ओपेरा हम लोग ने टेलीविजन के परिदृश्य को बदल दिया। 1985 में दूरदर्शन पर पहली बाल मनोरंजन टेलीविजन श्रृंखला विक्रम बेताल और फिर शक्तिमान, सोन परी, और शाकलाका बूम बूम जैसे बच्चों के लिए कई प्रसिद्ध वेब श्रृंखलाओं का प्रसारण किया 1997 मे दूरदर्शन पर प्रसारित हुए शक्तिमान सीरियल का प्रभाव बच्चों पर ऐसा देखा जाने लगा की जब शक्तिमन द्वारा उत्पादों का विज्ञापन टेलीविज़न पर किया जाने लगा तो उससे प्रभावित होकर लोग उससे खरीदने लगे पारले जी बिस्कुट जैसे कुछ उत्पाद इसके उदहारण है 2000 मे बच्चों पर शाकालाका बूम बूम धारावाहिक का प्रभाव देखा जाने लगा धारावाहिक के आने के बाद बच्चों ने उसके जैसी पेंसिल का प्रयोग करना शुरू किया और उसकी पेंसिल के जैसी पेंसिल की बिक्री होनी शुरू हो गई 20 वीं शताब्दी में कुछ निजी चैनल आने के बाद उन पर विशेष तोर पर कुछ बच्चों के प्रशिद्ध धारावाहिकों का प्रसारण किया गया और कुछ प्रशिद्ध सीरिज को हिंदी मे डब किया गया। भारत के बहार के देशों की श्रृंखला को देख कर बच्चों के लिए उसी तरह के कुछ शो का निर्माण भारत मे किया गया जैसे छोटा भीम, मोटू पतलू,सूरज आदि लेकिन आज टेलीविजन के साथ वेब श्रृंखला और सोशल मीडिया ऐप द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है, और लेकिन कुछ बच्चे आज टेलीविजन पर धारावाहिक देख रहे हैं और कुछ बच्चे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर धारावाहिक देख रहे हैं बदलते समय ने सभी धारावाहिकों का तरीका बदल दिया है आज के समय मे बच्चे टेलीविज़न के साथ साथ मोबाइल पर भी धारावाहिक देख सकते हैं आज यह कहना अनुचित नही होगा की टेलीविज़न ने बच्चों पर प्रभाव ही नही डाला बल्कि उनके जीवन को बदल कर रख दिया है

संदर्भ सूची :-

1. https://www.gaonconnection.com/desh/save-hasdeo-forest-campaign-chhattisgarh-rap-song-appy-raja-protest-coal-mining-bhupesh-bhaghel-environment-music-nature-50786?infinitescroll=1
2. https://www.mauryajispeaks.com/2022/05/10-10-old-tv-serials-list-of-dd1.html
3. https://www.trendook.com/90s-popular-indian-tv-shows/
4. https://optiondee.blogspot.com/2020/01/chacha-chaudhary-tv-serial-sahara-tv.html
5. https://en.wikipedia.org/wiki/Indradhanush
6. https://www.abplive.com/photo-gallery/indian-television-famous-serial-like-chandrakanta-alif-laila-90s-shows-on-doordarshan-1413750

7. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B6%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%A8
8. https://www.youtube.com/watch?v=9Sb-aybjhXI
9. https://en.wikipedia.org/wiki/Suraj:_The_Rising_Star
10. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A5%8B%E0%A4%9F%E0%A5%82_%E0%A4%AA%E0%A4%A4%E0%A4%B2%E0%A5%82
11. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AC%E0%A4%BE%E0%A4%B2_%E0%A4%B5%E0%A5%80%E0%A4%B0
12. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A4%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%95_%E0%A4%AE%E0%A5%87%E0%A4%B9%E0%A4%A4%E0%A4%BE_%E0%A4%95%E0%A4%BE_%E0%A4%89%E0%A4%B2%E0%A5%8D%E0%A4%9F%E0%A4%BE_%E0%A4%9A%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A4%BE
13. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9B%E0%A5%8B%E0%A4%9F%E0%A4%BE_%E0%A4%AD%E0%A5%80%E0%A4%AE
14. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%85%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A4%A1%E0%A4%BC_%E0%A4%AC%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A4%A1%E0%A4%BC_%E0%A4%AC%E0%A4%AE%E0%A5%8D%E0%A4%AC%E0%A5%87_%E0%A4%AC%E0%A5%8B
15. https://theprint.in/features/takeshis-castle-a-japanese-gameshow-indians-took-to-heart-thanks-to-jaaved-jaaferis-take-offs/743854/
16. https://m.imdb.com/title/tt0374460/releaseinfo?ref_=tt_dt_aka
17. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%95%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A4%BE_%E0%A4%95%E0%A4%BE_%E0%A4%95%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A4%BE
18. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9A%E0%A4%BE%E0%A4%9A%E0%A4%BE_%E0%A4%9A%E0%A5%8C%E0%A4%A7%E0%A4%B0%E0%A5%80
19. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B6%E0%A4%BE%E0%A4%95%E0%A4%BE_%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%95%E0%A4%BE_%E0%A4%AC%E0%A5%82%E0%A4%AE_%E0%A4%AC%E0%A5%82%E0%A4%AE
20. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B6%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%A8
21. https://en.wikipedia.org/wiki/Potli_Baba_Ki
22. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A6_%E0%A4%9C%E0%A4%82%E0%A4%97%E0%A4%B2_%E0%A4%AC%E0%A5%81%E0%A4%95
23. Keval J. kumar [5th edition] Mass communication in India Jaico publishing house, JA-1 Jash chambers, Off sir Phirozshah Mehtra Road Mumbai,Maharastra.